ओ३म्

पाठविधि

# आयुर्वेदवाचस्पति



संवत् २०१५



प्रस्तोता

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,

हरिद्वार।

पृष्ठ संख्या



## तृतीय खण्ड



---

# आयुर्वेद वाचस्पति

के

# नियम

१ जिस छात्र ने गुरुकुल कांगड़ी के आयुर्वेद महाविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर ली होगी और आयुर्वेद महाविद्यालय के अध्यक्ष जिस को सिफारिश करेंगे वह आयुर्वेदीय स्नातकोत्तर परीक्षा का अधिकारी होगा।

२ जिन छात्रों ने निम्नलिखित परीक्षाओं में से कोई परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है वे भी योग्य सिद्ध होने पर इस स्नातकोत्तर परीक्षा में प्रवेश पा सकेंगे —

क. उत्तरप्रदेशीय भारतीय चिकित्सा परिषद् द्वारा संचालित डी. आई. एम. एस., बी.आई.एम.एस., एम.बी. बी एस. ( आयुर्वेदाचार्य ) परीक्षायें।

ख. भिषगाचार्य — जयपुर।

ग. आयुर्वेदाचार्य — निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ।

घ. बी.ए.एम.एस. — बम्बई।

ङ. जी.सी.आई एस. — मद्रास।

च. किसी राज्य सरकार द्वारा संचालित मान्यता प्राप्त आयुर्वेद महाविद्यालयों के स्नातक।

३ इस स्नातकोत्तर परीक्षा में न्यूनतम उत्तीर्णाङ्क ४० प्रति-

शत होंगे ।

४ गुरुकुल कांगड़ी की आयुर्वेदीय स्नातकोत्तर परीक्षा में प्रविष्ट होने के लिए प्रार्थी को अपना आवेदन-पत्र जून मास की ३० तारीख तक, ६ रुपये प्रवेश शुल्क, तथा ५ रुपये मासिक के हिसाब से एक वर्ष का ६० रुपये शिक्षा शुल्क के साथ प्रस्तोता कार्यालय में भेज देना चाहिये ।

५ मुद्रित प्रवेश-प्रार्थना-पत्र प्रस्तोता कार्यालय से प्राप्त हो सकता है ।

६ स्नातकोत्तर परीक्षा की 'वाचस्पति' उपाधि प्राप्त करने से पूर्व विद्यार्थी का २ वर्ष तक आयुर्वेद महाविद्यालय में रहना आवश्यक है ।

७ स्नातकोत्तर उपाधि के लिए अध्ययन करने वाले विद्यार्थी आचार्य द्वारा निर्दिष्ट उपाध्यायों के निरीक्षण में अध्ययन करेंगे ।

८ गुरुकुल कांगड़ी के नियन्त्रण सम्बन्धी सब नियम स्नातकोत्तर परीक्षा के विद्यार्थियों पर भी लागू होंगे ।

९ स्नातकोत्तर परीक्षा का माध्यम, विद्यार्थी की इच्छानुसार संस्कृत या हिन्दी होगा ।

१० स्नातकोत्तर परीक्षा के लिए प्रविष्ट छात्रों से प्रशिक्षणार्थ आयुर्वेद महाविद्यालय तथा चिकित्सालय में कार्य लिया जा सकेगा ।

११ किन्हीं विशेष अवस्थाओं में शिक्षापटल स्नातकोत्तर परीक्षा के किसी विद्यार्थी के लिए निवास या अध्ययन सम्बन्धी नियमों को शिथिल भी कर सकेगा। परन्तु ऐसा करते हुवे शिक्षापटल इस बात का ध्यान रखेगा कि जिन परिस्थितियों में वह विद्यार्थी रहता है, वे स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए उपयुक्त है या नहीं।

१२ स्नातकोत्तर परीक्षा के विद्यार्थी को अपने द्वितीय वर्ष के निबन्ध के विषय की स्वीकृति के लिए प्रार्थना-पत्र द्वितीय वर्ष के प्रारम्भ में जून मास की ३० तारीख तक नियम संख्या ७ में निर्दिष्ट इस विषय के उपाध्याय की सिफारिश के साथ प्रस्तोता कार्यायय में भेज देना चाहिए।

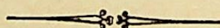
१३ इस निबन्ध की परीक्षा के लिए शिक्षापटल ३ परीक्षकों की उपसमिति नियत करेगा। इन परीक्षकों में से एक परीक्षक, विद्यार्थी के निर्देशन के लिये नियुक्त उपाध्याय भी होगा।

१४ निबन्ध इस वर्ष की परीक्षा तिथि से दो मास पूर्व, निश्चित रूप से, प्रस्तोता कार्यालय में पहुंच जाना चाहिये।

१४ प्रश्न-पत्रों के परीक्षक शिक्षापटल द्वारा नियुक्त किये जायेंगे।

१५ आयुर्वेदीय स्नातकोत्तर परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को 'आयुर्वेद वाचस्पति' उपाधि दी जायेगी ।

१७ यह आयुर्वेद वाचस्पति परीक्षा तीन खण्डों में होगी । प्रथम खण्ड ६ मास का होग। द्वितीय खण्ड भी छः मास का होगा और तृतीय खण्ड एक वर्ष में पूर्ण होगा ।



# पाठविधि

## प्रथम खण्ड

प्रथम खण्ड में निम्नलिखित चार प्रश्न-पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न पत्र में १०० अङ्क तथा समय तीन घण्टा होगा।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | प्रथम-पत्र | आयुर्वेद का इतिहास, | १०० अङ्क, | ३ घण्टे |
| २ | द्वितीय-पत्र | आयुर्वेद का दार्शनिक आधार | ,, | ,, |
| ३ | तृतीय-पत्र | त्रिदोष विज्ञान | ,, | ,, |
| ४ | चतुर्थ-पत्र | दोष धातु मल विज्ञान तथा शरीर क्रिया विज्ञान | ,, | ,, |

### प्रथम-पत्र — आयुर्वेद का इतिहास

( ४० व्याख्यान )

१ वैदिक युग : आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद, वेदों में आयुर्वेद विषयक प्रसंग (त्रिधातु शरीर व्यापार, शरीर रचना आदि)। वेदों में कीटाणु विषयक प्रसंग। रोग चर्चा, शल्य चर्चा, शल्य तथा शालाक्य, सूर्यरश्मि चिकित्सा, प्रसूति विषयक प्रसंग, वनस्पति विज्ञान। वैदिक साहित्य में आयुर्वेद। वैदिक कालीन समाज में चिकित्सकों की स्थिति।

२ संहिता युग : आयुर्वेदावतरण, आयुर्वेद के आचार्य तथा उन के द्वारा प्रणीत संहितायें। ब्रह्मा और आयुर्वेद। प्रजापति और आयुर्वेद। अश्विनी कुमार और आयुर्वेद।

इन्द्र और आयुर्वेद। भारद्वाज आत्रेय सम्प्रदाय। धन्वन्तरि सम्प्रदाय। काश्यप सम्प्रदाय। संहिताओं के स्थान तथा चिकित्सा के अङ्ग। अग्निवेश, जतुकर्ण। पराशर, हारीत, भेड़, क्षारपाणि, खरनाद, विश्वामित्र, काश्यप, औपधेनव, औभ्र, मालुक, निमि, पौष्कलावत, कंकायन, चाक्षुष्य, कृष्णात्रेय आदि आचार्यों की कृतियां। पाल्काप्य संहिता, गौतम संहिता, शालिहोत्र संहिता का ऐतिहासिक अध्ययन।

३ बौद्ध युग ( ५०० ईस्वी पूर्व से ६०० ईस्वी तक ) : धर्मार्थ औषधालयों का निर्माण, आयुर्वेद का विदेशों में प्रचार, अग्निवेश संहिता तथा सुश्रुत संहिता का प्रति-संस्कार, प्रति संस्कर्ता चरक, सुश्रुत, नागार्जुन, दृढ़बल का समय स्थान आदि। चरक, पतजलि और कनिष्क के वैद्य, चरक, नागार्जुन, बौद्ध भदन्त नागार्जुन (रसकर्ता), नागार्जुन ( सुश्रुत संहिता के संस्कर्ता ) बौद्ध युग में आयुर्वेद का देश व समाज पर प्रभाव। आयुर्वेद की राजमान्यता, आयुर्वेद की संस्थायें।

४ पौराणिक युग ( ६०० से १००० ईस्वी तक ) : पौराणिक युग में आयुर्वेद का प्रसार, धर्मार्थ चिकित्सालयों का निर्माण, आयुर्वेद का विदेशों में प्रचार। रस शास्त्र का विकास। आयुर्वेद और अलबरूनी। नागार्जुन तथा रस शास्त्र का क्रियात्मक कार्य। धातुवाद का चमत्कार,

प्राचीन धातुवाद तथा आधुनिक रसशास्त्र। पुराण युग में आयुर्वेद का समाज, संस्कृति, देश और राजनीति पर प्रभाव। इस युग के आचार्यों के ग्रन्थों की ऐतिहासिक आलोचना।

५ यवन काल ( १००० ई० से १७०० ई० तक ) : प्रांतीय भाषाओं में आयुर्वेद। विभिन्न ग्रन्थलेखकों के नाम, समय तथा उन की कृतियों की ऐतिहासिक आलोचना। उस काल की आयुर्वेदीय शिक्षा संस्थायें। आयुर्वेद की तत्कालीन अवस्था।

६ आंग्ल तथा वर्तमान युग ( १७०० ई० के पश्चात् ) : आयुर्वेद की उन्नति, आयुर्वेद विषयक संस्थायें, आयुर्वेद की उन्नति तथा संगठन के लिए विविध प्रयत्न। आयुर्वेद महासम्मेलन। आयुर्वेद की शिक्षण संस्थायें। आयुर्वेद विषयक बोर्डों की स्थापना। आयुर्वेद की राजमान्यता। शिक्षा पद्धति। आयुर्वेद के नवीन ग्रंथ। अन्वेषण-संस्थायें। आयुर्वेद के सम्बन्ध में केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के द्वारा निर्मित नीति और विधान। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आयुर्वेद की स्थिति। आयुर्वेद के संगठनों का सिंहावलोकन।

**सहायक ग्रन्थ**

१ हिस्ट्री ऑफ इण्डियन मैडिसन — श्री जी.डी. मुकर्जी

२ हिस्ट्री ऑफ आर्यन मैडिकल साइन्स
श्री ठाकुर ऑफ गोंडिल

३ प्रत्यक्ष शारीरम् का उपोद्घात ।

४ काश्यप संहिता का उपोद्घात ।

५ आयुर्वेद का इतिहास — श्री सूरमचन्द्र, श्री अत्रिदेव तथा श्री महेन्द्रनाथ

६ वृद्धत्रयी ।

## द्वितीय-पत्र — आयुर्वेद का दार्शनिक आधार
### ( ४० व्याख्यान )

१ पदार्थ विज्ञान : षट् पदार्थ निरूपण तथा चिकित्सा शास्त्र में उन की उपयोगिता ।

२ प्रमाण विज्ञान : प्रमाणों के भेद तथा चिकित्सा उन की ~~शास्त्र में~~ उपयोगिता ।

३ तत्व निरूपण : प्रत्यक्ष सर्ग तथा भौतिक सर्ग का निरूपण । चिकित्सा में इन की उपयोगिता । सर्ग तथा लय । आधुनिक तथा प्राचीन दृष्टि से तत्व का लक्षण और दोनों प्रकार के तत्वों का भेद और सामंजस्य । शरीर का और आधुनिक तत्वों का सम्बन्ध । भूत, महाभूत और भौतिक विकार ।

४ पुनर्जन्म तथा मोक्ष : पुनर्जन्म तथा मोक्ष के कारण और

लक्षण । पुनर्जन्म में प्रमाण, स्वभावोपरमवाद में चिकित्सा का स्थान ।

५ पुरुष : पुरुष के लक्षण, कारण, भेद । आयुर्वेद में पुरुष के मानने की उपयोगिता । संहिता ग्रंथों में दार्शनिक विचार ।

६ आयुर्वेद के दार्शनिक आधार और आधुनिक विज्ञान में उन का कहां तक समन्वय है ?

**सहायक ग्रन्थ**

१ चरक संहिता : सूत्र स्थान, अध्याय १,११,१६,२५, ।
शरीर स्थान, अ. १,२ ।

२ सुश्रुत संहिता : शरीर स्थान, अ. १ ।

३ सांख्यतत्व कौमुदी ।

४ कारिकावली प्रत्यक्ष खण्ड ।

५ आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान — श्री रणजितराय

## तृतीय-पत्र — त्रिदोष

**( ४० व्याख्यान )**

१ रोगों की उत्पत्ति ।

२ प्राकृत दोषों के स्वरूप, गुण, कर्म तथा भेदों का विशुद्ध शब्द विवेचन ।

३ वैकृत दोषों के स्वरूप, कारण तथा कर्म ।

४ दोषों पर ऋतु, अहोरात्र, आयु, भोजन परिपाक काल, प्रकृति तथा रसों का प्रभाव ।

५ रस रक्त आदि धातुओं तथा अग्नि का दोषों से सम्बन्ध ।

६ दोषों की विविध गति ।

७ वात नानात्मज, पित्त नानात्मज तथा कफ नानात्मज विकारों का विवरण पूर्वक अध्ययन ।

८ प्रत्येक दोष के प्रसर तथा स्थान संश्रय से भिन्न-भिन्न देहावयवों में उत्पन्न विकार ।

९ दोषावरण का विशद विवेचन तथा विविध आवरणों का अध्ययन ।

१० दोषांश कल्पना ।

### सहायक ग्रन्थ

१ चरक संहिता मूल तथा चक्रपाणिदत्त व्याख्या ।

२ सुश्रुत संहिता मूल तथा डल्हण की व्याख्या ।

३ अष्टांग संग्रह तथा इन्दु टीका के त्रिदोष से सम्बद्ध अंश।

४ त्रिदोष विमर्श　　श्री धर्मदत्त जी

५ आयुर्वेद क्रिया शरीर, रणजित राय के त्रिदोष से संकलित अंश ।

## चतुर्थ-पत्र — शरीर क्रिया विज्ञान तथा दोषधातु मल विज्ञान

( ५० व्याख्यान )

१ दोष : दोषों का धातुओं तथा मलों से सम्बन्ध । दोषों

की दूषक और आरोग्यकर स्थिति ।

२ अग्नि : अग्नि का स्वरूप, भेद, अग्नि की उत्पत्ति । आहार पाक, धातु पाक, मल पाक ।

३ धातु : धातुओं की संख्या, उत्पत्ति, स्वरूप, कार्य, वृद्धि तथा क्षय के लक्षण । ओज का स्वरूप, कार्य, वृद्धि तथा क्षय के कारण । ओज के स्वरूप के सम्बन्ध में विभिन्न मत ।

४ मल : मलों की उत्पत्ति, स्वरूप, कर्म, वृद्धि तथा क्षय के लक्षण ।

५ इन्द्रिय : इन्द्रिय, आशय, स्रोतस् तथा ग्रन्थियों (ग्लैण्ड्स) की उत्पत्ति, भेद, स्वरूप तथा कर्म । इन का दोषों से सम्बन्ध ।

### सहायक ग्रन्थ

१ अभिनव शरीर क्रिया विज्ञान — श्री प्रियव्रत

२ आयुर्वेदीय क्रिया-शारीर — श्री रणजित राय

—

# पाठविधि

## द्वितीय खण्ड

द्वितीय खण्ड में निम्नलिखित दो प्रश्न-पत्र होंगे। प्रत्येक पत्र के दो भाग होंगे। प्रथम भाग में ५० तथा द्वितीय भाग में १०० अंक होंगे। प्रत्येक पत्र का समय ३, ३ घण्टे होगा।

१ प्रथम-पत्र—रस शास्त्र तथा भैषज्य कल्पना—

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम भाग | ५० अंक | समय ३ घण्टे। |
| द्वितीय भाग | १०० अंक | |

२ द्वितीय-पत्र द्रव्य गुण विज्ञान—

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम भाग | ५० अंक | समय ३ घण्टे। |
| द्वितीय भाग | १०० अंक | |

### प्रथम पत्र — रस शास्त्र तथा भैषज्य कल्पना

( २० व्याख्यान )

### प्रथम भाग

१ रस, उपरस, महारस, साधारण रस, धातु, उपधातु, मिश्रधातु, रत्न, उपरत्न, विष, तथा उपविष का परिज्ञान, उत्पत्ति, भेद तथा वर्गीकरण का वैज्ञानिक आधार।

२ रस शाला निर्माण। रस शास्त्र में प्रयुक्त होने वाले यन्त्र, मूषा, पुट, मुद्रा, भ्राष्ट्री तथा कोष्ठी का निर्माण एवं प्रयोग ज्ञान।

३ रस शास्त्र में प्रयुक्त होने वाली परिभाषाओं का ज्ञान।

## द्वितीय भाग

( ४० व्याख्यान )

१ रस, उपरस, महारस, साधारण रस का शोधन, मारण, अमृतीकरण, गुण तथा उपयोग का विशद ज्ञान।

२ पारद के अष्टादश संस्कारों का विशेष अध्ययन।

३ धातु, उपधातु, मिश्रधातु, रत्न, उपरत्न का शोधन, मारण, अमृतीकरण, सत्वपातन, गुण, धर्म तथा उपयोगों का विशिष्ट अध्ययन।

४ रसयोगों तथा भस्मों में भावना एवं द्रव्य मिश्रण का महत्व।

५ रसयोगों में विष तथा उपविष के उपयोग का प्रभाव ज्ञान।

६ निम्नलिखित कल्पनाओं के निर्माण का विशिष्ट तथा सामान्य ज्ञान और उन में प्रयुक्त होने वाले मुख्य-मुख्य द्रव्यों के उपयोग का विवेचनात्मक ज्ञान--

क. अवलेह – च्यवनप्राशावलेह।

ख. मोदक – चतुस्सम मोदक।

ग. कषाय – गुडूच्यादि कषाय।

घ. आसव – कुमार्यासव।

ङ. अरिष्ट – द्राक्षारिष्ट।

च. सुरा – मृतसंजीवनी सुरा ।

छ. सुरासार – मृगमद सुरा और सार ।

ज. तैल – विषगर्भ तैल ।

झ. घृत – सुकुमार कुमार घृत ।

ञ. अर्क – मिश्रेयादि अर्क ।

ट. लेप – दशांग लेप ।

ठ. उपनाह –

ड. प्रलेप (पेण्ट) ।

ढ. मलहर (ऑइण्टमैण्ट) ।

ण. क्षार – प्रतिसारणीय क्षार ।

त. वर्ति – फलवर्ति ।

थ. प्रस्तर – सुधादि प्रस्तर ।

द. नस्य – कटफलादि नस्य ।

ध. अंजन – भीमसेनी अंजन ।

न. सत्व – अमृता सत्व ।

प. सार – अगरु सार, शिशपा सार ।

फ. द्राव – शंख द्राव ।

७ निम्नलिखित रसयोगों का निर्माण, कार्य तथा उपयोग—

क. मृत्युंजय रस ।

ख. सिद्धप्राणेश्वर रस ।

ग. बोल पर्पटी ।

घ. स्वर्णमालती वसन्त ।

ङ. वसन्तकुसुमाकर ।

च. कस्तूरी भैरव ।

छ. मण्डूर वटक ।

ज. कामदुधा रस ।

झ. बृ० योगराज गुग्गुलु ।

ञ. प्रताप लंकेश्वर ।

ट. महाशंख वटी ।

### सहायक पुस्तकें

१ बृहत् रस प्रदीप ।

२ आयुर्वेद प्रकाश ( सोम देव ) ।

३ रस रत्न समुच्चय ( कुलकर्णी टीका ) ।

४ रस तरंगिणी ।

५ रसायन सार ( श्याम सुन्दर ) ।

६ रस हृदय तन्त्र ।

## द्वितीय-पत्र — द्रव्यगुण विज्ञान

१ द्रव्य शब्द का अर्थ, द्रव्य लक्षण, कार्य द्रव्यों का उत्पत्ति प्रकार, द्रव्यों का वर्गीकरण, पंच महाभूतादि भेद से पंच द्रव्य भेद, प्रभाव भेद से द्रव्य भेद, योनि भेद से द्रव्य भेद, उद्भिज, प्राणिज, पार्थिव द्रव्य, औषध तथा आहार भेद

से द्रव्य भेद, विपाक भेद से द्रव्य भेद, वीर्य भेद से द्रव्य भेद, कर्म भेद से द्रव्य भेद, द्रव्य का प्रधानत्व। द्रव्यगत पंच पदार्थ। समान प्रत्ययारब्ध और विचित्र प्रत्ययारब्ध द्रव्य।

२ गुण लक्षण। गुण संख्या, सामान्य गुण, विशेष गुण, गुणों का भौतिक संगठन, दोषानुसार गुणों का विवेचन, पर आदि दश गुणों का निरूपण, गुणों के युग्मों के सम्बन्ध में मत भेद, गुण प्राधान्य।

३ रस शब्द का लक्षण, उत्पत्ति, रस संख्या, रसों का अन्यथा भाव, अनुरस निरूपण, रसों का भौतिक संगठन, रसों में गुणतारतम्य, द्रव्यगत रसों का प्रकृति समसमवायत्व तथा विकृति विषम समवायत्व।

४ विपाक लक्षण, अवस्था पाक निष्ठापाक निरूपण, विपाक के सम्बन्ध में विभिन्न मत, मतों का समन्वय।

५ वीर्य लक्षण, द्विविध तथा अष्टविध वीर्य निरूपण। इनका समन्वय। वीर्य का भौतिक विवेचन।

६ प्रभाव का लक्षण। समान प्रत्ययारब्ध तथा विचित्र प्रत्ययारब्ध द्रव्यों के प्रभाव।

७ द्रव्य संग्रह तथा संरक्षण।

८ निम्नलिखित ओषधियों का विशेष अध्ययन और गुण, धर्म तथा रस, विपाक, वीर्य प्रभाव के आधार पर इनका

भिन्न-भिन्न रोगों पर प्रयोग ज्ञान ।

| | |
|---|---|
| अम्लपर्णी ( रेवन्द चीनी ) | एला |
| अमर बल्ली | बृहदेला |
| अन्नामय | एरण्ड |
| अतिविषा | कटुकी |
| अनन्तमूल | कट्फल |
| अपामार्ग | कण्टकारी द्वय |
| अर्क | कपिकच्छु |
| अर्जुन | कपित्थ |
| अश्वत्थ | कम्पिल्ल |
| अश्वगन्धा | कर्कट शृङ्गी |
| अशोक | कर्पूर |
| अहिफेन | काकमाची |
| आमलकी | कांचनार |
| आरग्वध | कारस्कर |
| आकार करभ | कासनी |
| इन्द्रवारुणी | किराततिक्ता |
| ईसबगोल | कुटज |
| उदुम्बर | कुलत्थ |
| उशीर | कुष्ठ |
| उलट कम्बल | कुंकुम |

| | |
|---|---|
| कौकिलाक्ष | निर्गुण्डी |
| खदिर | पारसीक यवानिका |
| गुग्गुलु | पुनर्नवा |
| गुडूची | पुष्करमूल |
| गोक्षुर द्वय | पूति करंज |
| गोजिह्वा | करंज |
| घृतकुमारी | बिन्दुक ( काफी ) |
| चन्दन ( श्वेत ) | बब्बूल |
| चन्दन ( रक्त ) | ब्राह्मी |
| जटामांसी | बाकुची |
| जातिफल | बोल |
| जीरक | भल्लातक |
| त्वक् | भृङ्गराज |
| त्रिवृत् | भंगा |
| तुलसी | मदनफल |
| दारुहरिद्रा | मधुयष्टि |
| द्वीपान्तर वचा | मरिच |
| देवदारु | मस्तकी (रूमी मस्तगी) |
| धान्यक | मायाफल (माजूफल) |
| नागकेसर | मिश्रेया |
| निम्ब | मुण्डिका |

मुस्ता
मंजिष्ठा
यवतिक्ता (कालमेघ)
यवासक
रसोन
रोहितक
लज्जालु
लवंग
लोबान
लोध्र
वट
वत्सनाभ
वच
वनपुष्पा (वनफ्शा)
वनसर्षप (खूबकलां)
वरुण
वासा
विडंग
विदारी
वृद्धदारुक
वंश तथा वंशरोचना
शतावरी
शाल्मली
शिग्रु
शुण्ठी
शंखपुष्पी
सर्पगन्धा
स्वर्ण क्षीरी
सिनकोना
सुरंजना
सूची (बैलाडोना)
सौवीर बदर (उन्नाव)
हरिद्रा
हरीतकी
त्रिफला
दशमूल
षडूषण
तृणपंचमूल
आम्र
एरण्डकर्कटी
कदली
कशेरुक

| | |
|---|---|
| कूष्माण्ड | राजोदुम्बर (अंजीर) |
| खर्जूर | सिम्वितिका |
| जम्वीर | वाताद (बादाम) |
| जम्बु | मखान्न |
| तूद | मूंगफली |
| दाडिम | दुग्ध |
| द्राक्षा | मधु |
| दशांगुल | मद्य |
| नागरंग | लवण |
| निम्बूक | क्षार |
| परूषक | प्राणिजद्रव्य। |

९ अभिनव द्रव्यों का गुण, रस, वीर्य, विपाक तथा दोष-शामकता के आधार पर चिकित्सा कार्य में प्रयोगाभ्यास।

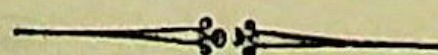
**सहायक ग्रन्थ**

१ द्रव्यगुण विज्ञान (यादवजी)।

२ औषध गुणधर्म विवेचन (कालेड़ा बोगड़ा)।

३ रसादि परिज्ञान (जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल)।

४ इण्डियन मैटीरिया मैडिका ( नादकर्णी )।



# पाठविधि

## तृतीय खण्ड

तृतीय खण्ड में निम्नलिखित तीन प्रश्न पत्र होंगे। तथा एक निबन्ध लिखना होगा। प्रत्येक प्रश्न पत्र के १०० अंक तथा समय ३ घण्टा होगा।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | प्रथम-पत्र—निदान | १०० अंक | ३ घंटे |
| २ | द्वितीय-पत्र—चिकित्सा (क) | १०० अंक | ३ घंटे |
| ३ | तृतीय-पत्र—चिकित्सा (ख) | १०० अंक | ३ घंटे |
| ४ | निबन्ध | १०० अंक | |

### प्रथम-पत्र—निदान

( ५० व्याख्यान )

१ रोग परीक्षा विधि—अष्ट विध परीक्षा, पंचविध परीक्षा, त्रिविध परीक्षा।

२ निदान पंचक—दोष विवेचन।

३ निम्नलिखित रोगों के पाश्चात्य निदान का आयुर्वेदिक दृष्टि से अध्ययन।

ज्वर—निज तथा आगन्तुक ज्वर, विविध सन्निपात ज्वर यथा आन्त्रिक ज्वर ( टाइफाइड ), सन्धिक ज्वर ( रिह्यमैटिक फीवर ), काल ज्वर ( काला ज़ार ), ग्रन्थिक ज्वर ( प्लेग )। वातबलासक ( बेरीबेरी ), वातश्लैष्मिक ( इन्फ्लूएंजा ), सौषुम्निक ज्वर ( सैरिब्रो

स्पाइनल फीवर ), विषम ज्वर ( मलेरिया ), दण्डक ज्वर (डेंग्यू फीवर), प्रलेपक ज्वर, श्वसनक (निमूनिया)।

कुष्ठ (लैप्रसी), वीसर्प ( एरिसिप्लस ), प्रतिश्याय ( कौराइज़ा ), अतिसार ( डाइरिया ), प्रवाहिका ( डिसैण्टरी ), ग्रहणी ( स्प्रू ), विशूचिका अलसक विलम्बिका ( कौलरा ), कफज कृमि ( इन्टैस्टाइनल वर्म्स ), राज यक्ष्मा ( ट्युबरक्युलोसिस् ), फिरंग ( सिफिलिस ), उष्णवात ( गनौरिया ), दण्डापतानक ( टैटेनस ), रोमान्तिका ( मीज़ल्स ) मसूरिका ( स्मौल पौक्स ), वात रक्त ( गाउट् )।

४ निम्नलिखित रोगों का विशेष सम्प्राप्ति पूर्वक अध्ययन--

कास, श्वास, हिक्का, अग्निमान्द्य, अरुचि, अजीर्ण, शूल, विबन्ध, अर्श, यकृत्, प्लीहा के रोग, उदर्द, शीतपित्त, पांडु, कामला, हलीमक, उदर रोग, दाह, भ्रम, अम्लपित्त, रक्तपित्त, पित्ताश्मरी, प्रमेह, मूत्राश्मरी, वातव्याधि, उन्माद, अपस्मार, शिरोरोग, उरुस्तम्भ, मूर्च्छा, सन्यास, हृदयरोग, वस्तिरोग।

स्त्री रोग--अनार्तवा, कष्टार्तवा, अत्यार्तवा, वन्ध्या इनका २० प्रकार के योनि व्यापद रोगों के साथ तुलनात्मक अध्ययन। श्वेत प्रदर, सोमरोग, रक्तगुल्म, गर्भपात। मूढ़गर्भ, गर्भिणी रोग, ज्वर, अतिसार, कास,

शोथ आदि । प्रसवोत्तर ज्वर, मक्कल शूल आदि ।

बाल रोग—वमन, अतिसार, अस्थिमार्दव, शोष, नाभिपाक, बालपक्षाघात, बालाक्षेप, कण्ठ रोहिणी, अहिपूतना, पूतना, क्षीरालसक ।

## सहायक ग्रन्थ

१ माधव निदान मधुकोष टीका सहित ।
२ सिद्धान्त निदान ।
३ व्याधि विज्ञान ।
४ रोगी परीक्षा ।
५ चरक संहिता—सूत्रस्थान १०, ११, १२–२१, २८, ३०।
निदानस्थान १–८ ।
विमान स्थान २, ३, ४, ६, ७, ८ ।
इन्द्रिय स्थान सम्पूर्ण ।
चिकित्सा स्थान निदान अंश ३–३० ।
६ सुश्रुत संहिता—निदान स्थान १, ५, ६, ७, १०, १३ ।
सूत्र स्थान १०, १५, २१, २४, २६, ३३, ३५, ४६ ।
चिकित्सा स्थान २३ ।
उत्तर तन्त्र ३९–५९, ६६ ।
७ आयुर्वेदीय विकृति विज्ञान—श्री पुरुषोत्तम सखाराम हिर्लेकर ।

८ दोष कारणत्व मीमांसा—प्रियव्रत शर्मा ।

## द्वितीय-पत्र — चिकित्सा (क)

( ५० व्याख्यान )

१ निम्नलिखित रोगों का विशेष अध्ययन—

मन्दाग्नि, संग्रहणी, अर्श, उदरशूल, जलोदर, यकृत् वृद्धि, प्लीहा वृद्धि, यकृत् शोथ, यकृत् वृद्धि, गुल्म, पाण्डु, कामला, हलीमक, शोथ, उदरकृमि, अम्लपित्त, प्रमेह, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, रक्तपित्त ।

ज्वर—सन्निपातज्वर यथा–आन्त्रिक ज्वर, श्वसनक ज्वर, सन्धिक ज्वर, सौषुम्निक ज्वर, श्लेष्म ज्वर, विषमज्वर ।

वात रक्त, आमवात, पक्षाघात, अर्दित, गृध्रसी, अपतानक, विश्वाची, अपतन्त्रक, हृदयरोग, शिरोरोग, मानस रोग ।

## तृतीय-पत्र — चिकित्सा ( ख )

( ५० व्याख्यान )

१ वालरोग—बालातिसार, शोष, अस्थिमार्दव, बालपक्षाघात, कण्ठरोहिणी, स्तन्यदोष ।

२ स्त्रीरोग—आर्तवदोष, प्रदर, रक्तगुल्म, गर्भिणी रोग, सूतिका रोग ।

३ वाजीकरण तथा रसायन ।

४ पंच कर्म ।

**सहायक ग्रन्थ—चिकित्सा (क)**

१ चरक संहिता चिकित्सा स्थान अ–३–२९ ।
२ सुश्रुत संहिता उत्तर तन्त्र अ–३९–५६ ।
३ चिकित्सा तत्व प्रदीप ।
४ काय चिकित्सा ( गंगाप्रसाद पाण्डेय ) ।
५ भैषज्य रत्नावली ।
६ रसेन्द्रसार संग्रह ।
७ रसतन्त्र सार व सिद्ध योग संग्रह ।

**सहायक ग्रन्थ—चिकित्सा (ख)**

१ चरक चिकित्सा स्थान १, २ तथा ३० अध्याय ।
२ भैषज्य रत्नावली ।
३ रसेन्द्र सार संग्रह ।

क्रियात्मक तथा निबन्ध — २०० अंक १०० अंक

अन्तिम खण्ड के अन्त में प्रस्तुत किया जाने वाला यह निबन्ध, उस क्रियात्मक के आधार पर लिखा जायेगा, जो परीक्षार्थी को दो वर्षों तक चिकित्सालय में सम्पन्न करना है। परीक्षार्थी को प्रतिवर्ष कम से कम ५० रोगियों का पूर्ण चिकित्सा विवरण रोगीपत्रों पर अंकित करना होगा। इन पत्रकों को प्रत्येक खण्ड की परीक्षा के समय देखा जायेगा और इन के अंक दिये जायेंगे ।

—

२४

८





१






१

२

३

प्रकाशक : धर्मपाल विद्यालङ्कार,
सहायक मुख्याधिष्ठाता,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार।

२००. ६. २०१५

मुद्रक : रामेश बेदी,
गुरुकुल मुद्रणालय,
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।